

१ डाहा जागळी जग या गा दयक ॥ जळया गा स्वसिकाय, मूला दव, काय ॥ वन जागा वन, पूजाः
३ ॥ ववि या ग १ खंदी कु १ सिरु य या गा, या मिया, हा ध पूजा या य, थ रव ना वि य, गु ल र ग ठ र्सी व न
व ध्म य ठ य, दि ग व ध्म य ठ य, या क सि न वा य, सि ध्म न, व वि यी य का व ० य, सि ध्म न न हा ल, ली सा र्सी
दू का य ॥ ॥ य र्ळ कि न न स्व य, लू य ल, डा हा य ल, ग य, गु ल र ग ठ र्सी, व जी ळ या ग वि य, की व न पूजा या य
थ वू मा ळा य, अ मि कृ णु द य क था य स, क य व, डा हा य व स्व न, अ मि कृ णु द न, न व का था सा न, क व मि र्
० पूजा, द सि ना वि य, क ग न क, वि स र्जन ॥ ॥ थं यी थी, का यी थी, अू ळ यी थी रं पूजा ळा य, नि म नु न

याय, गायक काल, आगमसर्पदाय कान यज्ञ, समय यज्ञ ॥ ॥ सुमि (गा) धन, की बल ध्यान, की न
गाय, वसुधा वा विवासन, लिंगा विवासन, सुगुणा गन, लजया गन, धवना विवासन, महावती विष,
या कुपूजा क्लाय, कननक, विसजल, धरन ॥ ॥ यक्ष भू विवासन, दासल, प्रणिष्ठा कृद्रू, गि सा अ
दीर्घ, वसु आदिर्न, गुकरुठाठ, गियक, पूजा क्लाय, यक्ष सा वा दूला याव, दी ग व लू य ठ थ, ला क
पात्र पूजा, धर्न सु यो र्य या य, गु व र ठा ठ, आसन स वि श्या य ॥ गु व म लु ल, ध गु वि, वं ग य पूजा, म लु व
विवासन, अग्नि स्थापन, दिग वा ० गाय, अग्ना रु नि, क्लाना रु नि, धवना रु नि ना धून काव, धव य नि

अग्नि रु नि

499

सुद्ध सूर्य, धर्न द ग क्रिया याय, का वा स्या पूजा, धूर्ल रु नि, महा वलि दी य, कननक, ध व ल ग य क, अ
गि वी द, ध ग ध व य नि स्था ॥ ॥ वा गी या ॥ धन वी ना, दिग व लू, दिग, धूर्व, दक्षिण, यक्षी म, उगु, रु गी ल,
अग्नि, मल न, वा य ध, दिग पूजा, आसन स वि श्या काव, गात्र पूजा याय, गाल क्लाय ॥ नृ य गी ग स रि ग न,
क्रिया आल रु या य, धूर्व व न, यक्ष आल रु ॥ धवना रु नि ना धून काव ॥ वल्ला चैन या य, वेद स री वी
विष ॥ आगा मूल म लु ल, दी स ० व लि, वल्ला रु नि या य ॥ ना गि काल, ध कि स र्थ काव, उद्द द वा व न, ल
भा र्थ क ॥ नालि काल ॥ दूर्गे गि य लि सा धन या य ॥ ख नू मू डा ॥ यक्ष आ गी नी गा व न ॥ पूजा या य ॥ शि

धूलभाहनीन गवर्क ॥ यश्च धालालवक्त्राय ॥ गिलाहूगियाय ॥ स्वकिवाकनरुलालय ॥ मासाहूगि
 नादायाव यश्च धालालयक ॥ धूनकाव ॥ यश्च धालालवक्त्राय वहाक ॥ यश्च साविदय ॥ मासाहूगि
 य ॥ यश्च सालिहीलक ॥ धूनकाव, दूकायाव, धाथसंग ॥ ॥ धर्नयश्च धालालयक वयनि, सिद्ध
 गिहूयाय ॥ धूधूहूगियाय ॥ माहावलिविय, कर्मनक सकली, दक्षिणा ॥ आगिर्वाद्यविय, विसर्ज
 न, यश्च दाकिणीरुका ॥ धर्नगणयक याय, समयन ॥ वलिगयक मालमालझाय ॥ धर्मलागीया
 कील्ला ॥ ॥ सागीकूकू ॥ दीगवल्मयलथ ॥ लाकपालयूजायाय, सूर्योद्ययाय, असनसथाका

व, कीयालीशयाय ॥ यक्षयाय, य० माहूगि, लानाहूगी, धर्वगाहूगी, धूधूहूगी, दसवलिविय ॥ दवा
 गुलगा० यलथ ॥ यश्च धालालयकाव, धूनकाव ॥ कर्मनक, दक्षिणा, सग्वन, कृशाशिकक ॥ जल
 सिवलिल्लाय, लाकपालविसर्जणयाय ॥ आसिर्वाद्य ॥ मणुललायनयाय, कमालिजागाद्येण, कमा
 लियूजा ॥ धर्नजागुल, गनवकवलिविय ॥ भर्गयूजा, ड० रणधनरथा ॥ शुभममु ॥ ॥
 धूर्वेया, लू ॥ दक्षिणया, ना ॥ यक्षिमया, डाहा ॥ डगलया, कंग ॥ ॥ सानया, झल ॥ जूनीया, सिङ
 ल ॥ नलथया, कागल्लाह ॥ वायवया, लील ॥ धर्मवलिसधून्य ॥ ॥ भालूक ॥ दगकन ॥ गुलाशः

॥ गुच्छला ॥ छाया ॥ ललिक ॥ जिह्वली ॥ कालात्रा ॥ खालधाल ॥ चूल ॥ धूम जिगा १० दगयायू के गावे
 लिमछाय ॥ ॥ पूर्वयात्रा किनीधवी ॥ ककुल ॥ ककुल ॥ गिजा ॥ गीखद ॥ द्विकम ॥ धर्मगुगय
 धाय ॥ ॥ उगलया लामाधवी ॥ खयल ॥ गमलस्य ॥ साध्या ॥ धर्मकखाय धाय ॥ ॥ यद्धिमया ॥ ख
 तुलाकाधवी ॥ दूदू धाला ॥ ॥ दखिनया ॥ नूयीनीधवी ॥ ही ॥ धाला ॥ ॥ दाखया ॥ वक्रवालाही ३
 धवी ॥ धधाला ॥ ॥ लाथाय १०८ कागदयकाव ॥ कालयीवक्रहाल धूमन ॥ यधयाग लवहा
 य यधसालि जायाव जयं जयं वाहलि वयाहाल ॥ ॥ पूर्वया क्षीण नीलवज यण धका यधः

सूगय ॥ १ ॥ वृणानया क्षीण वक्रवन धका यधगव ॥ २ ॥ उरुलया क्षीण वन विश्ववक्र धका
 डाखदि ॥ ३ ॥ यद्धिमया क्षीण यधविन धका यधमृग ॥ ४ ॥ दखिनया वनवन क्षीणया धका रु
 लीदिनया ॥ ५ ॥ वायूवाया क्षीण वन द्विधाल धका निर्यास कनकि खानया ववन ॥ ६ ॥ नमृग
 कोनया क्षीण वन अक्रस धका यधवलकल ॥ ७ ॥ अग्निया लाग्या वन क्षीणया धका अंवल न
 या धका ॥ ८ ॥ दागया पीगवक्रवन क्षीण गीणायाय ॥ ९ ॥ पूर्वया वक्रक्षीण मूलक्षीण दखिणः
 कमक्षीण यद्धिमया वलनक्षीण उरुलया कवलक्षीण वृणाया गिगुल अग्नीया गुवाया नयया

खठ्वायुयायगायुद्धयाक्वालायनक्रागचक्रसूर्यवनक्रागलकायकायन॥ अर्द्धद्वालसयिः
 धिविधवगाक्कागवलागागअगुलजवखनकायक॥ धनक्रागवाय॥ ॥ कृगशुगीधन॥ वलीगगः
 सिंयाहलवलिशिंयाहलदिलागशिंयाहलदूवीलशिंयाहलअवशिंयाहलधनयश्चवलक
 ॥ कव॥ गायुवरावकादरावलिर्कण्ठकिलीदकण्ठकिलीअयलाधिसानधनडावधि॥ मगीय
 लमावगलडाहाधनयश्चवल॥ मागळागळाखानवामासहामलधनयश्चदही॥ ककुली
 कदूलधरवणुगिलेकीक्रमधनयश्चगुगध॥ धलसाखलकसीधलिदूदधनयश्चमृग॥ गाम

गुगामयगादधगादधिगाद्युगधनयश्चगर्वा॥ गायअक्रागएकायकाशायमलधनयश्चगिः
 द्वाध॥ यश्चगुगकायठधनक्रागशुगि॥ ॥ हलपद्मलागअयनीलधदालधलपुष्पलागककः
 गनलावगमगीधननववन॥ ॥

१ॐ नमः ४ श्री चक्रसम्बन्धाय ॥ श्री रुद्राय नमः ५ मम कृपा धिक् पिता १ चतुर्विंशति संसृष्टा चतुर्व
 काय नमः ४ ॥ १ ॥ सर्वो कालगिरिका वाणी दृष्टिं शुद्धा गिरिकुम्भे १ द्विष न्युगिरित्या दानां शुद्धा द्वा
 दशवारुद ॥ २ ॥ अयुगिरिष्ठिग निष्ठां ललाग साधनां कृदशुद्धिग १ लीलाय च वला धरुता ललाशेन
 वचस्त्रिक ॥ ३ ॥ सर्वे जगत्कृत्या शुद्धा आलीलां कृत्स्निन नमः ४ १ यश्च क्लान विष्टुर्देही चक्रसंयोगयान ३
 थ ॥ ४ ॥ यस्मात्पानमिगा शुद्धा वामचक्षुःशुद्धालिन १ जगत्सारुनिना गार्थं गजखन्दा लिन नमः ४ ॥
 ॥ ५ ॥ यत्र मानय नाथन सर्वे वृद्ध स्याथ धनं १ कर्तुं मन्त्रकायानं दृष्टा धानय नमः ४ ॥ ६ ॥ का

यवाक्किर्तुं दामानं शययन शुद्धालिन १ रावा राव विकल्पा र्थं कृदा र्थं कर्त्तुं यानय ॥ ७ ॥ गिरि
 वाफार्थिन क्लृप्तं शय शुद्धा गिरि शुलिन १ वाधिविर्क विष्टुर्दत्ता द्वाङ्ग धालिन नमः ४ ॥ ८ ॥ सम्यक्
 क्लान स्य वधार्थं नमः ४ या सरुज सदा १ कृपा गागुत्र सायुष्मं च कयुष्मं कया लिन ॥ ९ ॥ समस्त क
 ल्यानां शुन्यं विमूक्ति यदशुद्धिग १ वदमशुद्धयथा नमानित्य नमस्तु गि ॥ १० ॥ यश्च क्लानः
 मयी वक्र माला गिरि सिद्धा विन १ समुधिगत्वा क्षमाय कया ल गिरि वन नमः ४ ॥ ११ ॥ शिववर्धिवि
 शुद्धेत्वा चन्द्रा च गिरि शरन १ सर्वे लाकारे कालित्वा द्विष्टवक्रा मुभालिन ॥ १२ ॥ सश्चिगाशः

मयूषात्वा, ऊठमकूटधात्रिर्न। चतुमालविनासार्थं, दंष्ट्राकलालरीमर्षी ॥ १३ ॥ मिथ्यादृष्टि
 यरुनार्थं, विष्टिनास्यायननमः। ध्यानयुक्तविष्टिदत्ता, दृष्टदवात्रनत्रयि ॥ १४ ॥ कयाशुन्य
 गयावका, वावाकालिगिर्ननमः। मरुवागविष्टिदत्ता, भारुयवागशुद्धिग ॥ १५ ॥ व्याः
 क्षुजिनायपक्षगण, स्वत्रवर्णविष्टिद्विगः। अलिकालिविष्टिद्विद्या, कृगाद्वत्रुशुमालिर्न ॥
 ॥ १६ ॥ शुद्धासर्वगत्रीत्रय, रसधूसत्रनमः। गावसफक्त्रुर्वेद्वि, वृथसमाशिलिखन ॥ १
 ॥ १७ ॥ गीगित्रसागलन्यम, विष्टिद्विर्नकनथा। कृष्टेकृष्टशुभमक, ननलाकामुष्टवर्क ॥ १८ ॥
 ॥ ॥ निधीसम्वत्रस्यविष्टिद्वि ॥ ॥

१। गार्कन्यार्नयननीदधिरुलकसुर्मयावकादीयमाना, यान्द्वगुययुक्तं नृयनिवधयुर्नयुक्तं क
 क्काद्वत्रुष्ट ॥ १३ ॥ किकावैवधुधीजलचलगर्लसिद्धिमर्नगनाय, वृष्ट्याशुमीमासरात्रादिमयिवत्र
 नयुष्टिगानां युगैस्त ॥ ॥ यस्तानयादवाल्, धर्मनायालाकशिठशिष्ट, गा, कन्या, गीष्ट, रलीध
 ली, दूदू४, स्यावसा, खान, भक्तास्यथाक, मगा, वध, कृष्ट, चयिकृणा, वाजा, वधसर्दकाव, वव, दाक
 धत्रय, वाकृणा, वाकृदूयाववव, दाभर्क, थाक, जाथाकावथाक, वस्यामिसा, वाकृविळावकृव, रि
 कशिठ, मंगल, धर्मयार्थकायाव, थाक ॥ धर्मनायात्रागसाशिठकृथा ॥ ॥ मर्कनिलाशिष्टिकीरु

उगमयिमुखीमुक्ककगश्वनग्रं पुवर्षिहिनना
कुम्भस्वशिमुखकलहंकाष्टरात्रकृष्टा, पु
॥ ॥ पुष्पनयाठवाल, धननायालाः
ठाठखाल, वि, साखालानमयाव, वव, न
न, व्याकवसगमनियाव, वव, कायवाव, यं
ननायात्राकमशिठ, सियरुव, कार्यमसि

गंजठमकूठधर्षकपूष्याद्वर्षु, १६८मर्षिगुन
सुभयस्तिनानायदिनमनर्षिनेवसिद्धिर्नना
नसामशीठरुल ॥ वाठवा, वकनक, विथ्या
कखायाग, कासदकामनूख, इठठव, कादूखा
ठधर्ष, लाठाववाठ, सिंकविठाव, वव, थ
धयीव ॥ ॥ शुश ॥ ॥